ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

# 'मैला आँचल' में राजनीति

**मनीष**
**वरिष्ठ शोध अध्येता,**
**हिंदी विभाग,**
**दिल्ली विश्वविद्यालय,**
**दिल्ली।**
**मो नं: 9013002325**
**ई-मेल:** mkmanishjnu@gmail.com

साहित्य में राजनीति? आधुनिक साहित्य के अध्येताओं के समक्ष यह विषय अपरिहार्य विचारणीय प्रश्न के रूप में उपस्थित हुआ है। मैनेजर पाण्डेय अपने आलेख 'उपन्यास और लोकतंत्र' में उपन्यास तथा लोकतंत्र दोनों को ही वैश्विक एवं आधुनिक परिघटना मानते हैं। इसके आलावा वे उपन्यास में लोकतंत्र व इसके विभिन्न उपादानों, घटकों का समावेश अनिवार्य मानते हैं। हम जानते हैं कि 'लोकतंत्र' आधुनिक राजनीतिक शासन-प्रणाली है। आधुनिक काल में राजनीति का महत्व इतना बढ़ गया है कि 'मनुष्य एक सामजिक प्राणी है' की तर्ज़ पर ही 'मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है' भी कहा जाने लगा है। यद्यपि राजनीति की उपस्थिति प्राचीन यूनानी 'नगर-राज्य' से लेकर आधुनिक 'राष्ट्र-राज्य' तक में रही है। किन्तु आधुनिक काल में राजनीति राज्य के सामजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक प्रश्नों को भी नियमित व नियंत्रित करने लगी। इसी परिप्रेक्ष्य में साहित्य में राजनीति की अनिवार्य उपस्थिति पर प्रकाश डालते हुए नेमिचन्द्र जैन कहते हैं–

**"यहाँ एक बात तो निस्संकोच कही जा सकती है कि जो स्थान मध्ययुग के जीवन में धर्म को, धार्मिक विश्वासों और धार्मिक मतवादों को, प्राप्त था, लगभग वही आज राजनीति, राजनीतिक विश्वासों और आंदोलनों को प्राप्त है। इसलिए आज का सर्जनात्मक साहित्य राजनीति से बचकर चलने का दंभ करे, तो वह या तो झूठा सिद्ध होगा अथवा घातक।"**[1]

अमेरिकी समीक्षक इरविंग हो अपनी पुस्तक **'पॉलिटिक्स एंड द नॉवेल'**[2] में उपन्यास को सामाजिक साक्ष्य समझने से अधिक महत्त्वपूर्ण मानते हैं, उपन्यास में उपस्थित समाज पर पड़ने वाले राजनीतिक दबाव को। वह यह भी कहते हैं कि 19वीं सदी तक के साहित्य की समीक्षा में पारंपरिक आलोचना पद्धति कारगर है। लेकिन जैसे ही हम 20वीं सदी के उपन्यासों की समीक्षा करने बैठते हैं, उपन्यास में राजनीति का व्यापक समावेश देखते हैं। इस स्थिति में राजनीति और विचारधारा से उपन्यास अर्थात् साहित्य की समीक्षा में अत्यधिक सहयोग प्राप्त होता है।

'मैला आँचल' में राजनीति का समावेश स्वाभाविक रूप से हुआ है। इस उपन्यास में राजनीति का वर्णन व चित्रण आम जनता की बढ़ती राजनीतिक सजगता के तौर पर हुआ है। राजनीति आम जन-जीवन में रची-बसी

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

है। इस उपन्यास में अभिधात्मक रूप से तो संपूर्ण बिहार भी नहीं केवल पूर्णिया जनपद का राजनीतिक परिवेश चित्रित हुआ है, उसमें भी मेरीगंज गाँव का परिवेश उपन्यास के केन्द्र में है। किन्तु प्रकारांतर से रेणु भारतीय राजनीति की तस्वीर प्रस्तुत कर रहे थे। 'मैला आँचल' का प्रकाशन 1954 ई॰ में हुआ किन्तु उपन्यास में फणीश्वरनाथ रेणु ने 1946 ई॰ से 1948 ई॰ तक का ही कथ्य प्रस्तुत किया है। 24 अगस्त, 1946 ई॰ को पराधीन भारत में काँग्रेस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनती है। इसी अंतरिम सरकार के समय का राजनीतिक दल, उनकी नीतियां, उन नीतियों का प्रभाव, नीतिगत ख़ामियां आदि सब 'मैला आँचल' में विस्तार से तो नहीं, झलकियों के रूप में उपस्थित है। 'मैला आँचल' की कई अन्य विशेषताओं में एक यह भी है कि इसमें फणीश्वरनाथ रेणु ने पात्रों के रूपक के माध्यम से भारतीय राजनीति, तत्कालीन राजनीतिक वातावरण व विभिन्न राजनीतिक दलों की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण किया है।

आलोच्य उपन्यास में प्रमुख रूप से दो राजनीतिक दलों की उपस्थिति है- काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी अपने हिंदुत्व की नीतियों के साथ उपस्थित है। सर्वप्रथम 'मैला आँचल' में उपस्थित काँग्रेस के बारे में फणीश्वरनाथ रेणु के मतों का विश्लेषण कर लें। उपन्यास में काँग्रेस से संबंधित कई व्यक्तियों का नाम आया है– डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि राष्ट्रीय नेताओं के साथ-साथ स्थानीय कार्यकर्त्ताओं में रामकिसुन बाबु, 'उनकी स्त्री', शिवनाथ चौधरी, बालदेव, बावनदास और चुन्नी गोसाईं आदि। इनमें से बालदेव, बावनदास और चुन्नी गोसाईं के चरित्र का विश्लेषण आवश्यक है। ये तीनों काँग्रेस पार्टी के तीन प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का प्रतिनिधित्व भी करते हैं और चरित्रोद्घाटन भी।

बालदेव जड़ काँग्रेसी है। इसकी समस्त चेतना 'हिंसाबात' के इर्द-गिर्द ही घुमती रहती है। बालदेव के पास यह विवेक नहीं है कि वह किसी कार्य के औचित्य का निर्णय कर सके। वह केवल इतना ही समझ पाता है कि अगर किसी कार्य में हिंसा हुई है तो वह हर हाल में गलत है। उदहारण के लिए, नागा बाबा वाले प्रसंग में बालदेव कालीचरण की प्रसंगानुकूल प्रतिक्रिया का विरोध केवल इसलिए करता है क्योंकि कालीचरण ने 'हिंसाबात' किया है। बालदेव न तो न्याय की अवधारणा से परिचित है और न ही महात्मा गाँधी के अन्य सिद्धांतों– सत्य, सत्याग्रह आदि से। किसी भी सूरत में हिंसा नहीं करना ही बालदेव के गांधीवाद की इतिश्री है। गांधीवाद की यह समझ निश्चय ही सतही है। रेणु बालदेव जैसे अनेक काँग्रेसियों की उक्त समझ पर कालीचरण के माध्यम से व्यंग्य करते हैं–

**"दरोगा साहब, बालदेव जी नाम में भी लाठी-तलवार नहीं लगाते हैं। हिंसाबाद ..."**[3]

इसके साथ ही रेणु ने बालदेव का चारित्रिक पतन भी दिखाया है। यह पतन केवल बालदेव का ही नहीं काँग्रेस का भी मूल्यों के स्तर पर पतन का परिचायक है। उपन्यास में बालदेव का यह पतन सत्ता में बने रहने के लिए काँग्रेस का गांधीवादी मूल्यों– सत्य, अहिंसा, त्याग, बलिदान आदि से विचलन का रूपक है। अब राजनीति में राग, द्वेष, झूठ, छल, धोखा, षड्यंत्र, हत्या, अपराध आदि के माध्यम से ही सफलता प्राप्त की जा सकती है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'मैला आँचल' में बालदेव, बावनदास के जीवन भर की थाती- महात्मा गाँधी का पत्र- को केवल इसलिए जला देना चाहता है कि बावनदास को किसी प्रकार का लाभ न मिल जाए–

**"बालदेव अब जान रहते इन चिट्ठियों को नहीं दे सकता। इन चिट्ठियों को देखते ही जमाहिरलाल नेहरू जी बावनदास को मेनिस्टर बना देंगे, नहीं तो डिल्ली जरूर बुला लेंगे। ..."[4]**

बालदेव के माध्यम से रेणु ने संभवतः यह दिखाने की कोशिश की है कि आजादी के बाद काँग्रेस गाँधीवादी आदर्शों का गला घोंट कर सत्ता हासिल करने, उसे बचाए रखने, किसी और को सत्ता तक पहुँचने से रोकने के खेल में शामिल हो जाती है।

जहाँ तक प्रश्न बावनदास का है, वह सच्चा गाँधीवादी है। वह सत्य, अहिंसा, त्याग, बलिदान, कर्म आदि का वास्तविक पुजारी है। इन्हीं नीतियों पर चलकर महात्मा गाँधी और बावनदास जैसे उनके कोटि-कोटि समर्थक भारत को स्वतंत्रता दिलाते हैं। किन्तु ये नीतियां भारत के स्वतंत्र होते ही भारत के कर्णधारों के लिए अप्रासंगिक हो गए। 'मैला आँचल' में रेणु ने यह दर्शाया है कि स्वतंत्र भारत के सार्वजनिक जीवन में जो कोई भी इन उच्चतर मानव-मूल्यों पर अडिग रहेगा, यह व्यवस्था उसके अस्तित्व को समाप्त कर देगी। चाहे वह 'मैला आँचल' का गांधीवादी बावनदास हो या स्वयं महात्मा गाँधी। उपन्यास में बावनदास की हत्या वास्तव में गांधीवादी मूल्यों की हत्या है। स्वतंत्र भारत के शासन-प्रशासन को संचालित करने के लिए गांधीवादी मूल्य उपयोगी नहीं रहे। स्वतंत्र भारत के शासकों के लिए गांधीवाद प्रासंगिक नहीं रहा। बावनदास अर्थात् गांधीवादी मूल्यों की हत्या कोई और नहीं बल्कि काँग्रेस में अभी-अभी शामिल हुआ 'काँग्रेसी लूटेरा' दुलारचंद कापरा आज़ाद भारत की पुलिस व प्रशासन के सहयोग से करता है। फणीश्वरनाथ रेणु ने बावनदास की हत्या के समय सर्वथा उपयुक्त टिप्पणी की है–

**"बावन ने दो आजाद देशों की, हिंदुस्तान और पाकिस्तान की ईमानदारी को, इंसानियत को, बस दो डेग में ही नाप लिया!"[5]**

स्वतंत्रता-प्राप्ति के 70 वर्षों के अनुभव के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि स्वतंत्र भारत में गांधीवाद का ठीक वही हश्र हुआ जैसा कि रेणु के 'मैला आँचल' में बावनदास का होता है।

चुन्नी गोसाईं काँग्रेस की नीतियों से असंतुष्ट कार्यकर्ताओं, नेताओं का प्रतीक है। 'मैला आँचल' में वर्णित है– 'चुन्नी गोसाईं तो सोसलिट पाटी में चला गया।' यह ऐतिहासिक सत्य भी है कि सोशलिस्ट पार्टी का गठन असंतुष्ट काँग्रेसियों ने ही किया था। भारत के विशेष सन्दर्भ में काँग्रेस से ही टूट कर सोशलिस्ट पार्टी का जन्म हुआ था। 17 मई, 1934 ई० को पटना में काँग्रेसी सोशलिस्टों का सम्मेलन आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में हुआ था। बाद में जयप्रकाश नारायण ने सोशलिस्ट पार्टी का नेतृत्व किया। चुन्नी गोसाईं का संबंध काँग्रेस के इसी असंतुष्ट सोशलिस्ट धड़े से है।

प्रारम्भ में बालदेव के साथ रहने वाला कालीचरण बालदेव की अव्यावहारिक नीतियों से असंतुष्ट होकर बालदेव और काँग्रेस का साथ छोड़ देता है। वह सोशलिस्ट पार्टी का सक्रिय कार्यकर्त्ता बन जाता है।

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

कालीचरण बालदेव के जड़ व अप्रासंगिक हो चुके अहिंसा के सिद्धांत से परेशान है। कालीचरण सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्त्ता बनने से पहले एक ही सवाल पूछता है–

**"जी, यदि हम कोई काम करने लगें, दस पब्लिक की भलाई का काम, और उसको कोई 'हिंसाबात' कहकर रोके तो हम क्या करेंगें?"**[6]

सोशलिस्ट पार्टी अपनी नीतियां सिद्धांततः किसानों और मजदूरों को केंद्र में रखकर बनाती है। यह पार्टी मेहनतकशों की पार्टी है। जुल्म व शोषण का नामोनिशान मिटा देने के लिए प्रतिबद्ध यह राजनीतिक दल क्रांति में विश्वास रखती है। सोशलिस्ट पार्टी की वैचारिकी का आधार कई स्थानों पर 'मैला आँचल' में मौज़ूद है।

**"ज़मीन किसकी?... जोतनेवालों की! जो जोतेगा वह बोएगा, जो बोएगा वह काटेगा। कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुछ हो !"**[7]

कालीचरण सोशलिस्ट पार्टी का कर्मठ, ईमानदार व समर्पित कार्यकर्त्ता है। वह जी-जान से अपने दल की नीतियों- जितना वह समझ पाता है- पर चलता है। लेकिन सोशलिस्ट पार्टी के सभी कार्यकर्त्ता कालीचरण की तरह ही ईमानदार व समर्पित नहीं हैं। उसमें सोमाजट जैसा डकैत भी शामिल है तो वासुदेव व सुंदर जैसे कार्यकर्त्ता भी हैं जो जरूरत पड़ने पर सोमाजट के साथ मिलकर डकैती करने से भी बाज नहीं आते। भारतीय परिदृश्य में सोशलिस्ट पार्टी का जन्म काँग्रेस के विकल्प के रूप में हुआ था। सोशलिस्ट पार्टी से अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के बावज़ूद भी रेणु 'मैला आँचल' में सोशलिस्ट पार्टी को काँग्रेस के विकल्प के तौर पर ही प्रस्तुत करते हैं। रेणु तटस्थ रहकर सभी राजनीतिक दलों के अंतर्विरोध को सामने रखते हैं, सोशलिस्ट पार्टी का भी।

'मैला आँचल' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की उपस्थिति भर है। आर०एस०एस कोई राजनीतिक दल नहीं था बल्कि सामजिक व सांस्कृतिक मोर्चे पर लड़ने वाला, हिन्दुत्व समर्थक संगठन था। रेणु आर०एस०एस द्वारा हिंदुत्व के प्रचार-प्रसार का तो उल्लेख मात्र करते हैं किन्तु उसकी आक्रामकता पर कटाक्ष भी करते चलते हैं–

**"इस आर्यावर्त में केवल आर्य अर्थात् शुद्ध हिन्दू ही रह सकते हैं ... यवनों ने हमारे आर्यावर्त की संस्कृति, धर्म, कला-कौशल को नष्ट कर दिया है। अभी हिन्दू संतान म्लेच्छ संस्कृति की पुजारी हो गई है। ...**

× × ×

**यवनों का पक्ष लेनेवाले हिन्दुओं की तो गरदन उड़ा देने को जी करता है।"**[8]

फणीश्वरनाथ रेणु भली-भांति जानते थे कि विभिन्न राजनीतिक दलों का वर्गीय आधार भिन्न-भिन्न होता है। काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी के नेता और कार्यकर्त्ता एक ही वर्ग से नहीं आते। 'काँग्रेस अमीरों की पार्टी है।' काँग्रेस में पूँजीपतियों, जमींदारों, व्यापारियों का बोलबाला है। बावनदास जैसे काँग्रेस के समर्पित कार्यकर्ताओं की काँग्रेस में ही कोई पूछ नहीं है। तहलीलदार साहब जिनका अब तक काँग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है, लेकिन वे अपनी धन–दौलत के बल पर काँग्रेस के प्रतिष्ठित सदस्य बन जाते हैं। और तो और दुलारचंद कापरा जो कि

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

कालाबाजारी और तस्करी करता है, कटहा थाने का काँग्रेसी सेक्रेटरी है। इसी प्रकार सोशलिस्ट पार्टी गरीब किसानों व मजदूरों की पार्टी है। इस प्रकार फणीश्वरनाथ रेणु 'मैला आँचल' में भारतीय राजनीति का भविष्यगत स्पंदन, वोट-बैंक की राजनीति को भली-भांति महसूस कर रहे थे।

'मैला आँचल' में प्रायः सभी राजनीतिक दलों के एकाधिक अंतर्विरोधों का उल्लेख हुआ है। राजनीति में सिद्धांत और व्यवहार के बीच की गहरी खाई को रेखांकित किया गया है। काँग्रेस हो या सोशलिस्ट पार्टी, दोनों ही दलों की नीतियों के अंतर्विरोध को रेणु उद्घाटित करते हैं। उदाहरण के लिए काँग्रेस एवं सोशलिस्ट पार्टी की भूमि-बंदोबस्त तथा भू-हदबंदी से संबंधित नीतियां पूर्णतया स्पष्ट थी। भूमिहीनों को ज़मीन दिलाने के लिए काँग्रेस वैधानिक प्रबंध (दफ़ा 40) करती है जबकि सोशलिस्ट पार्टी संघर्ष के सहारे भूमिहीनों को ज़मीन पर मालिकाना हक़ दिलाने का प्रबंध करती है। काँग्रेस के कानून के अनुसार 'आधी' और 'बटैयादारी' करने वालों का उस ज़मीन पर कानूनी अधिकार हो जाएगा। किन्तु दोनों ही दल अपने नीतिगत अंतर्विरोध के कारण भूमिहीनों को ज़मीन दिलाने में असफल रहते हैं। काँग्रेस के नीयत में ही खोट है क्योंकि वे जमींदार ही उसके सदस्य हैं जिनका बड़ी मात्रा में ज़मीन पर कब्ज़ा है। यही कारण है कि काँग्रेस जान-बूझकर कानून में ही छिद्र छोड़ देती है जिसके कारण सभी जमींदार अपनी ज़मीन बचाने में कामयाब हो जाते हैं। भूमिहीन किसानों के हाथ कुछ नहीं लगता। सोशलिस्ट पार्टी तो भूमिहीनों को और भी जगजाहिर तौर पर धोखा देती है। सोशलिस्ट पार्टी 'संघर्ष का उपयुक्त समय' न होने का बहाना बनाकर संघर्ष के लिए संथालों को प्रेरित कर अपना पैर वापस खींच लेती है। उपयुक्त समय न होने की दलील सोशलिस्ट पार्टी में दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव का परिचायक है। सोशलिस्ट पार्टी की यह करतूत संथालों को मरने के लिए अकेला छोड़ देती है। और तो और सोशलिस्ट पार्टी के कुछ कार्यकर्त्ता संथालों के नरसंहार में गाँववालों का साथ देते हैं। संथालों के नर-संहार के समय सभी दलों के सम्मिलित नारों से इसका पता चलता है। यह सभी राजनीतिक दलों के अंतर्विरोधी चरित्र का एक उदहारण भर है। राजनीतिक दल इस प्रकार के अनेक अंतर्विरोधों की गठरी अपने साथ लिए रहते हैं।

'मैला आँचल' में रेणु राजनीतिक दलों के इसी अंतर्विरोधी चरित्र से आहत होकर समस्त राजनीति पर ही व्यंग्य करते हुए नज़र आते हैं। वह सिर्फ आर.एस. एस. के 'बौद्धिक विलास' को ही 'बुद्धू विलास' नहीं कहते। काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी की अव्यावहारिक नीतियों का भी मज़ाक उड़ाते हैं। रेणु 'सोसलिट काट कुर्ता' पहनने और 'बीड़ी नहीं, सीकरेट पीने' से ही सोशलिस्ट हो जाने की मनोवृत्ति पर व्यंग्य करते हैं। रेणु काँग्रेस की जड़ अहिंसा के सिद्धांत पर तो शुरू से अंत तक व्यंग्य ही करते रहते हैं। इसका माध्यम बनते हैं बालदेव जी! कालीचरण और बावनदास जैसे प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं का हश्र लगभग एक समान ही होता है। रेणु राजनीति के अवसरवादी चरित्र का उद्घाटन करने के लिए व्यंग्य का सहारा लेते हैं।

मेरीगंज की निरक्षर ग्रामीण जनता राजनीतिक दल की विचारधारा के मर्म को नहीं समझती। वे विचारधारा की अंतर्वस्तु को समझे बगैर बाह्य रूपाकार को ही राजनीति का पर्याय मान लेते हैं। 'मैला आँचल' में राजनीतिक दलों की केन्द्रीय विचारधारा गांवों तक 'रीड्युस' होकर पहुँचती है। विचारधाराओं का 'रिडक्शन' भारतीय गांवों की सच्चाई है। साथ ही, यह ग्रामीण जनता की सीमा भी है। इस उपन्यास के सम्पूर्ण कलेवर एवं

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

उपरोक्त विश्लेषण से यह बात स्पष्ट भी है। किन्तु रेणु राजनीति का पतन और आदर्शों से उसके स्खलन को भी रेखांकित करते चलते हैं। राजनीति का 'रिडक्शन' अगर जनता की सीमा है तो उसका पतन नेतृत्व की अक्षमता का परिचायक है। सत्तालोलुप राजनीति का आविर्भाव आजादी से पहले आंतरिक सरकार के समय में ही हो चुका था। बावनदास कहता है–

**"सोसलिस? सोसलिस? क्या कहेगा सोसलिस हमको?... सब पाटी समान। उस पाटी में भी जितने बड़े लोग हैं, मंतरी बनने के लिए मर कर रहे हैं। सब मेले-मंतरी होना चाहते हैं बालदेव! देस का काम, गरीबों का काम, चाहे मजूरों का काम, जो भी करते हैं, एक ही लोभ से ..."**[9]

जीवन भर जड़ ही सही, गांधीवादी सिद्धांतों पर चलने के बाद बालदेव भारतीय राजनीति की वास्तविकता को, उसके मर्म को समझ लेता है! वह कहता है–

**"वह अपने गाँव में रहेगा, अपने समाज में, अपनी जाति में रहेगा। ... जाति बहुत बड़ी चीज़ है। ... जाति की बात ऐसी है कि सभी बड़े-बड़े लीडर अपनी-अपनी जाति की पाटी में हैं। यह तो राजनीति है!"**[10]

भारत के विशेष परिप्रेक्ष्य में जाति स्वयं में एक राजनीतिक मुद्दा है। डॉ॰ अम्बेडकर जाति के प्रश्न को भारतीय राजनीति के केन्द्र में ले आते हैं। किन्तु भारतीय राजनीति अम्बेडकर के उद्देश्यों, उनके सपनों को साकार करने के क्रम में कब जाति आधारित मौकापरस्त राजनीति के युग में प्रवेश कर गई, पता ही नहीं चला। जाति के मसलों को सुलझाने की जगह जाति- आधारित राजनीति की जाने लगी। जाति का राजनीतिकरण ठीक वैसे ही हुआ जैसे धर्म का। जाति राजनीति का एक मुख्य प्रश्न होना ही चाहिए। किन्तु जाति आधारित राजनीति एक नकारात्मक व विध्वंसात्मक प्रवृत्ति है। 'मैला आँचल' में काँग्रेसी बालदेव की उपरोक्त स्वीकारोक्ति के अतिरिक्त सोशलिस्ट पार्टी का उपन्यास में आगमन ही जाति आधारित राजनीति करते हुए होता है–

**"मेरीगंज में सबसे ज्यादे यादवों की आबादी है। वहाँ आपका (गंगाप्रसाद सिंह यादव अर्थात् सैनिक जी) जाना ही ठीक होगा। वहां आर्गेनाइज करने में कोई दिक्कत नहीं होगी। ..."**[11]

जातीय समीकरण और उसपर आधारित राजनीति भले ही विध्वंसक हो लेकिन भारतीय राजनीति का कटु-सत्य है। रेणु ने 1950 के दशक में ही भारतीय राजनीति के भविष्य को अपनी दूरदर्शिता से पहचान लिया था। इस मामले में तो रेणु भारतीय राजनीति के युग-द्रष्टा प्रतीत होते हैं।

फणीश्वरनाथ रेणु ने राजनीतिक दलों के आपसी गठजोड़ की सकरात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रवृत्तियों को रेखांकित किया है। काँग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी पूरे उपन्यास में दो स्थानों पर परस्पर गठजोड़ करते हैं। एक बार तो दोनों दल, अपने वैचारिक मतभेदों को ताक पर रखकर, संथालों के नरसंहार में ग्रामीणों की सहायता करती है। रेणु संकेत में ही सही यह दिखाते हैं कि संथालों की हत्या में काँग्रेस प्रत्यक्ष सहयोग करती है। सोशलिस्ट पार्टी का नेतृत्व तटस्थ रहता है। श्रीमद् भगवद्गीता से लेकर रामधारी सिंह 'दिनकर' तक भारतीय साहित्य में 'तटस्थता' को 'अपराध' माना गया है। भगत सिंह ने भी तटस्थता के स्थान पर पक्षधरता को उचित

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

माना है। और इस उपन्यास में तो सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्त्ता संथालों के हत्या-कांड में अपनी जाति वाले ग्रामीणों का साथ देता है। इसका पता चलता है उन नारों से जिसका उद्घोष हत्या-कांड के समय किया जाता है। 'सोशलिस्ट पार्टी जिंदाबाद' से लेकर 'महात्मा गाँधी की जै' का उद्घोष करने वाले इस सामूहिक नरसंहार में शामिल होते हैं। दोनों ही दलों का यह नकारात्मक गठजोड़ आम जनता के लिए विनाशकारी है। एक अन्य स्थान पर दोनों दलों में गठजोड़ होता है। गाँधी जी की हत्या के बाद दोनों दल आपसी मतभेदों को भूलाकर राष्ट्रीय शोक में शरीक होते हैं। जनता के हितों को ध्यान में रखकर इस तरह का गठजोड़ होना ही चाहिए। मेरी यह धारणा सर्वथा निर्मूल नहीं है कि रेणु इन दो उदाहरणों को प्रस्तुत कर आगामी भारतीय राजनीति के 'गठबंधन-धर्म' की रूप-रेखा प्रस्तुत कर रहे थे।

हम जानते हैं कि रेणु की राजनीतिक प्रतिबद्धता समाजवादी पार्टी के साथ थी। लेकिन रामविलास शर्मा ने रेणु को **"मैला आँचल में गांधीवाद की ओर अग्रसर पाया है।"**[12] उनके अनुसार तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद का 'हृदय परिवर्तन' होता है और वह किसानों को उनकी ज़मीन लौटा देता है। रामविलास शर्मा की यह आलोचना दुराग्रहपूर्ण है। क्योंकि अव्वल तो यह कि तहसीलदार किसानों के शोषण से प्राप्त 2000 बीघा ज़मीन में से मात्र 100 बीघा ज़मीन लौटाता है। ऐसा करके वह अपने नवासे के लिए ग्रामीणों की सहानुभूति प्राप्त करने में सफल हो जाता है। यह तहसीलदार की धूर्तता है न कि हृदय परिवर्तन। दूसरी बात, गांधीवाद कोई सांप-बिच्छू नहीं है कि उसे देखते ही हम हाथ-पाँव झारने लग जाएँ। गांधीवाद के सकारात्मक व हितकारी सिद्धांतों को सभी को अपनाना चाहिए। चाहे वह समाजवादी हो या मार्क्सवादी। रेणु 'मैला आँचल' में गांधीवाद के आलोचक के रूप में हमारे सामने आते हैं, छिद्रान्वेषक के तौर पर नहीं। वह गांधीवादी सिद्धांतों की सीमाओं का उल्लेख करते हैं। बावनदास की हत्या के माध्यम से स्वतंत्र भारत में गांधीवाद की अनुपयोगिता को रेखांकित करते हैं। साथ ही रेणु षड्यंत्रों की राजनीति के युग में गांधीवाद की ओर एक आशा भरी निगाह से भी देखते हैं। ममता उपन्यास के अंत में डॉ॰ प्रशांत से कहती है–

**"पढ़ गए ... महात्मा जी की आख़िरी लालसा? मैं तो कहती हूँ यह वह महाप्रकाश है, जिसकी रोशनी में दुनिया निर्भय हजारों बरस का सफ़र तय कर सकती है।"**[13]

इस प्रकार रेणु 'मैला आँचल' में गांधीवाद की मुकम्मल आलोचना प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर 'मैला आँचल' उपन्यास को इरविंग हो के निकष पर कसना समीचीन प्रतीत होता है। 'मैला आँचल', 'राजनीतिक उपन्यास' (पॉलिटिकल नॉवेल) तो नहीं है किन्तु इस उपन्यास की प्राणधारा राजनीति अवश्य है। यह मन्नू भंडारी का 'महोभोज', यशपाल का 'दादा कॉमरेड' या मक्सिम गोर्की की 'माँ' आदि की तरह का राजनीतिक उपन्यास नहीं है। राजनीति 'मैला आँचल' की पृष्ठभूमि है, केन्द्रीय तत्त्व नहीं। स्वतंत्र हो रहे भारत में राजनीति की अंगड़ाई को 'मैला आँचल' में महसूस किया जा सकता है। ग्रामीण जीवन पर राजनीति का प्रभाव, पतनशील राजनीति का चित्रण भी उल्लेखनीय है। फणीश्वरनाथ रेणु ने अपनी कालजयी कृति

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)

ISSN 2454-2725
www.jankritipatrika.in

'मैला आँचल' में भारतीय राजनीति की तत्कालीन दशा और आगामी दिशा को भी रेखांकित किया है। रेणु 'मैला आँचल' के माध्यम से भारतीय राजनीति की सर्जनात्मक आलोचना प्रस्तुत करते हैं।

**सन्दर्भ :**

[1] नेमीचन्द्र जैन, 'अधूरे साक्षात्कार', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002, पृष्ठ- 37

[2] Irwing Howe, 'Politics and the Novel', Horizon Press, New York, 1957, Page- 11
**"My interest was far less in literature as social evidence or testimony than in the literary problem of what happens to the novel when it is subjected to the pressures of politics and political ideology. In discussing nineteenth century writers I have employed more or less conventional methods of criticism, while in treating twentieth century writers I have found myself placing a greater stress upon politics and ideology as such; but this was not the result of any preconceived decision, it was a gradual shift in approach that seemed to be required by the nature of the novels themselves."**

[3] 'मैला आँचल', फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ 196

[4] वही॰, पृष्ठ- 301

[5] वही॰, पृष्ठ- 298

[6] वही॰, पृष्ठ- 89

[7] वही॰, पृष्ठ- 100

[8] वही॰, पृष्ठ- 119

[9] वही॰, पृष्ठ- 290

[10] वही॰, पृष्ठ- 302-303

[11] वही॰, पृष्ठ- 89

[12] रामविलास शर्मा, 'प्रेमचंद की परंपरा और आंचलिकता : मैला आँचल और परती परिकथा', 'मैला आँचल : वाद-विवाद और संवाद' (संपा॰), संपादक – भारत यायावर, आधार प्रकाशन, हरियाणा, 2006, पृष्ठ- 43-54

[13] 'मैला आँचल', फणीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011, पृष्ठ- 312

ISSN 2454-2725 www.jankritipatrika.in
जनकृति अंतरराष्ट्रीय पत्रिका/ Jankriti International Magazine (बहुभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका/Multilingual International Monthly Magazine)